

padhayji

CBSE | Class 10

हिंदी नोट्स

Hindi Notes

BY PADHAYI

Book - KRITIKA

पाठ 1 - माता का आंचल

लेखक परिचय

शिवपूजन सहाय हिंदी साहित्य के एक संवेदनशील और सरल लेखन शैली वाले लेखक थे। उनका जन्म 1893 में हुआ और वे आम जीवन की भावनाओं को बहुत ही सजीव तरीके से प्रस्तुत करते थे। “माता का आंचल” में उन्होंने बचपन की मासूमियत और माँ के स्नेह को बड़े ही अपनापन भरे अंदाज़ में दिखाया है, जिससे पाठक खुद को कहानी से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

समरी

माता का आंचल' कहानी बचपन की उन सच्ची और भावुक यादों को सामने लाती है, जहाँ एक बच्चे की दुनिया उसकी माँ के इर्द-गिर्द घूमती है। लेखक ने बड़े ही सरल और दिल छू लेने वाले अंदाज़ में दिखाया है कि कैसे माँ का प्यार, उसकी ममता और उसका आंचल बच्चे के लिए सबसे सुरक्षित जगह होता है। कहानी में गाँव का वातावरण, बचपन की मासूमियत और माँ-बेटे का गहरा रिश्ता बहुत ही जीवंत तरीके से उभरकर आता है। जब बच्चा डरता है या किसी परेशानी में होता है, तो उसे सबसे पहले माँ का ही सहारा याद आता है।

यह कहानी हमें एहसास कराती है कि माँ का प्यार निस्वार्थ और अनमोल होता है, जिसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता। कुल मिलाकर, यह पाठ हमें अपनी माँ के प्रति सम्मान, प्रेम और जुड़ाव को और गहराई से समझने के लिए प्रेरित करता

थीम (Theme)

- 1) माँ का निस्वार्थ प्यार – कहानी दिखाती है कि माँ का प्रेम बिना किसी शर्त के होता है। वह हर हाल में अपने बच्चे की सुरक्षा और खुशी चाहती है।
- 2) बचपन की मासूमियत – बच्चे की छोटी-छोटी भावनाएँ, डर और खुशियाँ बहुत ही सच्चे और प्यारे तरीके से सामने आती हैं, जो हमें अपने बचपन की याद दिलाती हैं।
- 3) माँ का आंचल = सुरक्षा का एहसास – बच्चे के लिए माँ का आंचल सबसे सुरक्षित जगह होता है, जहाँ उसे हर डर से राहत मिलती है।
- 4) परिवारिक जुड़ाव और अपनापन – कहानी यह बताती है कि परिवार, खासकर माँ-बेटे का रिश्ता, जीवन की सबसे मजबूत नींव होता है।
- 5) माँ के महत्व का एहसास – यह पाठ हमें सिखाता है कि हम अक्सर माँ के प्यार को सामान्य मान लेते हैं, लेकिन असल में वही हमारे जीवन की सबसे बड़ी ताकत होती है।

Tone

- 1) भावुक और मार्मिक
- 2) स्नेहमय और ममता से भरा
- 3) सरल और सहज
- 4) यादों से भरा (nostalgic)
- 5) आत्मीय और अपनापन लिए हुए

पाठ 2 - साना साना हाथ जोड़ी

लेखक परिचय

‘साना-साना हाथ जोड़ि’ के लेखक फणीश्वर नाथ ‘रेणु’ हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार थे। उनका जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार में हुआ। वे आंचलिक जीवन को बहुत संवेदनशील और जीवंत ढंग से प्रस्तुत करते थे। उनकी रचनाओं में ग्रामीण संस्कृति, सरलता और मानवीय भावनाएँ झलकती हैं, जिससे पाठक खुद को उनसे जुड़ा हुआ महसूस करता है।

समरी

‘साना-साना हाथ जोड़ि’ पाठ में लेखक ने पहाड़ी जीवन की सादगी, प्राकृतिक सौंदर्य और वहाँ के लोगों की मासूमियत को बहुत ही आत्मीय तरीके से प्रस्तुत किया है। कहानी में दिखाया गया है कि कैसे पहाड़ों में रहने वाले लोग प्रकृति के साथ गहरा जुड़ाव रखते हैं और उनका जीवन सरल, संतोषपूर्ण और खुशहाल होता है। लेखक जब वहाँ जाता है, तो उसे वहाँ के लोगों का भोला व्यवहार, उनका अपनापन और उनकी मेहनत बहुत प्रभावित करती है। ‘साना-साना हाथ जोड़ि’ का अर्थ ही है नम्रता और सम्मान के साथ अभिवादन करना, जो वहाँ की संस्कृति को दर्शाता है। इस पाठ के माध्यम से यह समझ आता है कि असली खुशी भौतिक चीज़ों में नहीं, बल्कि सादगी, आपसी प्रेम और प्रकृति के करीब रहने में होती है। कुल मिलाकर, यह कहानी हमें विनम्रता, संतोष और प्रकृति से जुड़ाव का सुंदर संदेश देती है।

थीम (Theme):-

- 1) प्रकृति से गहरा जुड़ाव – पहाड़ी जीवन में लोग प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर रहते हैं, जिससे सच्ची शांति और संतोष मिलता है।
- 2) सादगी भरा जीवन – कहानी बताती है कि बिना दिखावे के भी जीवन खुशहाल और संतुष्ट हो सकता है।
- 3) नम्रता और विनम्र व्यवहार – ‘साना-साना हाथ जोड़ि’ लोगों की विनम्रता और सम्मानजनक अभिवादन की परंपरा को दर्शाता है।
- 4) आपसी प्रेम और अपनापन – पहाड़ी लोगों के बीच गहरा जुड़ाव और सच्चा अपनापन दिखाई देता है।
- 5) असली खुशी का अर्थ – पाठ यह सिखाता है कि असली खुशी भौतिक चीज़ों में नहीं, बल्कि सादगी, रिश्तों और प्रकृति के करीब रहने में होती है।

Tone

- 1) सरल और सहज
- 2) आत्मीय और अपनापन भरा
- 3) प्रकृति-प्रेम से ओत-प्रोत
- 4) शांत और सुकून देने वाला
- 5) भावुक और संवेदनशील

पाठ 3 - मैं क्यों लिखता हूँ:-

लेखक परिचय:-

‘मैं क्यों लिखता हूँ’ के लेखक हरिवंश राय बच्चन हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनका जन्म 27 नवंबर 1907 को उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी रचनाओं में गहरी संवेदनाएँ, आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन के अनुभवों की सच्चाई झलकती है। वे लेखन को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम मानते थे।

समरी:-

‘मैं क्यों लिखता हूँ’ पाठ में लेखक ने अपने लेखन के उद्देश्य और उसके पीछे छिपी भावनाओं को बहुत ही सच्चे और आत्मीय ढंग से व्यक्त किया है। लेखक के अनुसार, लिखना केवल एक शौक या पेशा नहीं, बल्कि अपने भीतर उठने वाले विचारों, अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम है। जब मन में कुछ गहरा महसूस होता है या समाज में कुछ ऐसा दिखता है जो सोचने पर मजबूर करता है, तब लेखक उसे शब्दों में ढालता है। लेखन के जरिए वह अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है और समाज में जागरूकता लाने की कोशिश करता है। यह पाठ हमें सिखाता है कि लेखन आत्म-अभिव्यक्ति का एक सशक्त साधन है, जो व्यक्ति को अपने विचारों को स्पष्ट करने और दूसरों से जुड़ने में मदद करता है। कुल मिलाकर, यह रचना लेखन के महत्व और उसकी गहराई को समझाने का प्रयास करती

थीम (Theme):-

- 1) आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम – लेखक के लिए लिखना अपने भीतर के विचारों, भावनाओं और अनुभवों को खुलकर व्यक्त करने का तरीका है।
- 2) समाज के प्रति जिम्मेदारी – लेखन के जरिए लेखक समाज की समस्याओं, सच्चाइयों और मुद्दों को सामने लाता है।
- 3) भीतरी बेचैनी और प्रेरणा – जब मन में कोई गहरी भावना या सवाल उठता है, वही लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करता है।
- 4) विचारों को साझा करने की चाह – लेखक अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाकर उनसे जुड़ना और उन्हें सोचने पर मजबूर करना चाहता है।
- 5) लेखन का महत्व और शक्ति – यह पाठ दिखाता है कि लेखन केवल शब्द नहीं, बल्कि एक मजबूत माध्यम है जो समाज और सोच दोनों को प्रभावित कर सकता है।

Tone

- आत्ममंथनात्मक
- विचारशील
- गंभीर
- ईमानदार
- प्रेरणादायक

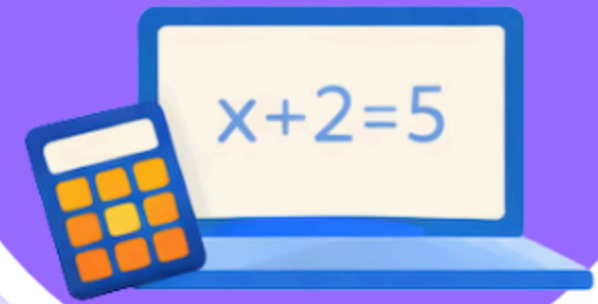
Thank You for Learning with
paohayi

1M+
Community



Ask Doubts, share problems
and connect with your peers

1L+
Practice Questions



Practice like a Topper with
our A+ Practice System

**Instant
Updates**



Stay Updated with latest
exam Updates

1k+
Resources



Everything you need from books,
chapterwise pyqs to notes

500+
Educators



You choose your mentor, no
course bundling

Click to visit :

